

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

1

विश्वास बाह्यतु चित्स्थरपातु सन्निधौ दिता स्वरपातु गतेष्वप्यथ ॥
चराचर जेसावेवे ॥ तेन जअर पाच आव्यव ॥ जिवांस्तु हेतु सिमावे ॥
द्वेयवैभव पै नृस ॥ १ ॥ धृतपुनछिदिस साकार ॥ धृतपणने चिनि राभी ॥
तमव्यय अक्षय जगदाकार भासति ॥ २ ॥ वसावल दिस जे जगा ॥ निज
रिताने तु सव्यंग ॥ अगपा हातात अनंग ॥ अंगगाचा मागत जमा जि ॥ ३ ॥
देखि जे ते ते न के सि ॥ न के ते तु चिह्ना सि ॥ हाणे न हाणे नाही न जपा सि ॥
हे सात जगसि सज्ज ॥ ४ ॥ हे सात जग होउ वियां दु रि ॥ नृपेका सबाह्य
आतरि ॥ बोलि कोन चिच्य रा नृ शिखे दशा स्त्रित वक्ता ॥ ५ ॥ उलपासा
निगे डि दिसे ॥ उसा सबाह्य गडि न आसे ॥ गे डि चि मा जि उसन सावे
ससि नृ जते स ॥ सौजन्य ॥ ६ ॥ वेदाया वक्ता तु हो सि ॥ वेदि प्रतिपादि जे नृ
सा सि ॥ सेखि वेदा सिना कळ सि ॥ निशेक वाच सि गुरु राधा ॥ ७ ॥ जे विका
आनु हाता चि ध्वनि ॥ आस ध्वनि मा सि विळे नी ॥ तो अनू हात वाज विजे
ध्वनि ॥ ये सना हि कोनी ॥ वाजवर दिदा त ॥ ८ ॥ ने विनू वेदाया वक्ता ॥
सकळ शास्त्राया युक्ति दाता ॥ तदि वेद शास्त्रा सदिता ॥ नृज वक्ता न बालव

ज

2

1911

हृणो नितु केवळ नि हो बि॥ आ गि हा क हा हि क माई क अनुवादति॥ नृयं
विघन कळ सि॥ ११॥ नृन कळ सि न हा॥ हे सिं यु क्ती न्या तु चि द्वा ना॥ रा ना
ह चि स्या पु ज ना॥ त व आ शान ना आ स ना॥ १२॥ जे य आ शान ना ना हि॥ ते ये श
ते पण का ई॥ हो का मु र्ख ह नो व दि ना हि॥ ते नो व रा पा हि हृण को ण॥ १३॥ तु शा
ता ना आ शाना॥ तु वो छ ता न बो छ वि ना॥ तु बहु ना य कु छ ना॥ तु सि ष्य छ क्ष ना ल
क्षणा॥ १४॥ तु नी श क्क नि वि का रा॥ तु नि गु र्नी रा का रो धा रा॥ हे हि हृण ना प डे
वि चार॥ तु ज ग दा को ज ग दा स॥ १५॥ ज ग दा का र तं प्र सि ध॥ अ ति वि रो ध को
ण ना न बा चि द्वा द॥ पर ना हि मा प स प रा य॥ आ ति वि रो ध को ना सि॥ १६॥ या व
रि स दु र ना था॥ तु स च र णि द्वा द स म ना ते ण स म सा ये नि ज क या श्री भा ग व ता
न्या छ चि सि॥ १७॥ ते चि श्री भा ग व ति॥ वा वि सा ये आ ध्या या य था ति॥ उ च
व पु सि लि नि ज शा ति॥ द्वि द स मा हि उ पा वो॥ १८॥ उ च व प्र स के ला वा डा जे ने॥
श्र म शाना च पु र को ण॥ तो श्री सु का सि ला ग ला गो उ ने ण॥ पु र को उ परि हि
न॥ १९॥ आ ई को नि उ च वा चि प्र स कि॥ श्री पु क सु खा व का चि ति॥ तो
व ध हृण परि सि ति॥ तु स ला श्री प ति हृण उ च वा सि॥ २०॥ वा स श
नि जा णि ति॥ ते जा णे स वे सु र य्या शा मि॥ उ च वे पु

श्रीपति संतोषात् ॥ २१ ॥ तेसातिआणिनिवृत्ति ॥ गेळचो आध्या
 प्रति ॥ अर्धके रायापरिहिति ॥ मिनुज युक्तिसागखेन ॥ २२ ॥ हेकपांड
 वकुळटिहका ॥ कोरवकुळि कुळदायेका ॥ शंति सिआधिकारिनु
 निका ॥ निजामसुखसाधावया ॥ २३ ॥ साधावया ब्रह्मप्राप्ति ॥ तुसकौ
 दक श्रवणार्थी ॥ थाळागि शान्तिनिवृत्ति ॥ हेकनृपतिहरिसाग ॥ २४ ॥
 तेवि सा आध्याई निरोपण ॥ हुजे निओमचिले मन ॥ सामनासिद्धे मा
 ये पुर्ण ॥ तेचि श्रीसखसागे ॥ सिद्धुगिता संरक्षण ॥ तेमनेज
 याचे कारण ॥ प्रसूति जयाचे निरोपण ॥ सागळ सपुर्णचो विसावि ॥ २५ ॥
 सागे निमात्रि विधचि मुण ॥ गुणक दखिले निजनिर्गुण ॥ हे गुणजया
 चे निरोपण ॥ सुखक्षण पय विसावा ॥ २६ ॥ सयि सावां आध्यावो येया ॥
 तो घड घडित विरक्त ॥ सागे निरलेल गिता ॥ स्त्रियादि समस्त ॥ विशये सागु
 ॥ २७ ॥ गुणविशये प्रसूति मना ॥ याचहुचे समाधान ॥ चौआध्याई वि
 हाई जना ॥ स्वमुखे श्रीसख सागे ॥ २८ ॥ करुनिया सावधान ॥ श्रीमु
 क्त योगिद्रोपण ॥ परिहितिसि कथा मंदसंधान ॥ निरोपण नीजपति ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥ श्रीमुकुटाच ॥ सवेद मारां सिरुं येवन ॥ भागवंत मुखे

॥ ३० ॥ सभाजयन् नृपवचामुक्त्वा ॥ समावभाषे प्रवर्णितं वीर्यं ॥
दिका ॥ पुकु हर्षणपरिस्थिति ॥ ऐकौ निउधवा चिविनति ॥ वचनेनोवावा श्रीपति ॥ तोउधवासिप्र
तिबोधि ॥ ३० ॥ आपरिस्थितिसिजाण ॥ करनिथासावधान ॥ श्रीपुकयोगिद्रपण ॥ सागसक
यविनयोग ॥ ३१ ॥ कोटिजन्मानिकेवळ ॥ द्विजवपाविजेसकळ ॥ हेमहापुन्याचनिजफळ
सकळतेचिनिफळाहुरिभक्तिविण ॥ ३२ ॥ सदासुफळआव्याचारख ॥ सावरिउपजका
अवतरख ॥ तोसफळीचनिफळेदेख ॥ तेसउतनलोकमजनेविण ॥ ३३ ॥ नेस्थितिनाहि
उधवापाति ॥ उतमजन्मधादवबोधि ॥ सदापुन्याहिहानासि ॥ श्रीमदासिसुलचिना ॥
॥ ३४ ॥ जाळियाहिराजसंपति ॥ जाविसंमनामगदुक्ति ॥ भागवतमुख्ययासिप्राप्ति ॥ सा
सिनिश्रीतीमहाराजा ॥ ३५ ॥ सुगुणसुदरपतेवृता ॥ अनकुळमिळाळियाकाना ॥
जोविसरनामगवप्तंथा ॥ भागवतमुख्येतायानाव ॥ ३६ ॥ यहिगुणिअतियुक्त ॥ धिवेक
सिप्रतिविरक्त ॥ श्रीसुखचरणिअनुरक्त ॥ नृपयागवतउधवा ॥ ३७ ॥ येवंचनजयश्रेष्ठ
पण ॥ तेश्रेष्ठेवेअतिगौण ॥ भगवतप्राप्तिनेश्रेष्ठपण ॥ तेणभाग्येपुर्णउधउ ॥ ३८ ॥ जोश्रीस
ष्ट्यायाविश्वोति ॥ तस्येकातरिसासि ॥ गुह्यज्ञानसाहज्यापासि ॥ साव्याभायासिकेवि
वान् ॥ ३९ ॥ परब्रह्मजेकासाक्षांत ॥ तेउधवासिजालेहस्तगत ॥ साव्याबोळा माजीवर्तन ॥
भाग्यभाग्यवंततायेक ॥ ४० ॥ उधवभाग्यवानिना ॥ रुकजालासगित ॥ स्यानेदेवोसउ
लातथा ॥ तेलातसुलमाहासुर्ये ॥ ४१ ॥ ज्यानेनिजभाग्येसांगता ॥ श्रीपुकासिहानसजव

॥ उधवभाभ्या न्यात हा ॥ मज सवथामानका ॥ १३ ॥ उधवभाभ्या न्यात उकु ॥
 वो सउळा श्री पुकु ॥ ते हे खे निकुर ना यकु ॥ जाळा अंते ती कु वि स्मितुं ॥ १४ ॥ तव मुक
 ह्मण राधासि ॥ परम भाग्ये ने उधवासि ॥ तो विन विनारुषिके ति ॥ वचन मात्र सिद्ध खला
 ॥ १५ ॥ उधवासि शांति चिन्हाड ॥ तो एव श्री पुका सिंगेड ॥ हाच पुरवा वया केडे ॥ नीरो प
 ण वाड सागित के ॥ १६ ॥ परम शांति या अधिकारी ॥ तुचि यकु निज निचादि ॥ ऐस उधव
 प्रेम पुरस्करि ॥ शांति श्री हरि सांगतु ॥ १७ ॥ सागवा नुवाया ॥ बाहे सप्त न
 स्मृत् ॥ साधु वेदुर्जन रते ॥ दुस्ते किं ॥ येः स मा चंद मी खरा ॥ १८ ॥ टिका ॥ उध
 वा नुजे बोली कासि ॥ मिस स म निचा ॥ निदे ज्या ॥ आप मानासि ॥ साहा वया को
 न्हासि शांति नाहि ॥ १९ ॥ देव पाहु का ॥ इति वसी ॥ मुख्ये ईश ला ग ज्या चा पायासि ॥ अष्ट
 मासि चि ज्या न्या दासि ॥ ब्रह्म शान ज्या पासि वचना कीत ॥ २० ॥ हे सा देव गुरु बृहस्पति
 हाचा सिध्ये तु विवेक मुर्ति ॥ याळा गि शांति या साधका युक्ति ॥ तुचि निश्चिंति जाणसि ॥ २१ ॥
 शांति आकळा व्या उधवासि ॥ अदर सहा रिसषिके सि ॥ अनुमोदु निहा या बोळासि ॥ तु
 घशा नि श्री हरि साग ॥ २२ ॥ निदाय वशा हलण ॥ दुज निदि धला आपमाना ॥ हाहा हे तो
 ईश्वरा जाण ॥ निज बोध पुर्ण जो म दृष्ट ॥ २३ ॥ ज्यासि सर्व मुति निजासना ॥ दृढ बाण ली स
 न दृता ॥ तो चि दुर्जना चा मधाता ॥ साहे सर्वथा ॥ आति सुरवे ॥ २४ ॥ जो स्ये हो ये अवधे

उधनिः साहाव याला गो शंति ॥ न के निश्चिनि प्रादना ॥ ६५ ॥ ऐसी रि ति ये थो
चिति ॥ उधवाचे मनो गति ॥ स्वरं सु नि श्री स ए नाथि ॥ शा ति च निश्चि तार्थ
सा गत ॥ ६६ ॥ दुर्जना नि यो दुःख ॥ पु वि स गि त लि नि ज शाने सि ॥ ये गि स थि
ह्वण उधवा सि ॥ ते अ ट क वा ट ले न या सि ॥ अ ति सं का न्या सि पा वळ ॥ ६७ ॥
हो ने उधवाचे मान सि ॥ हे शा ति आ सा ध्य स र्वा सि ॥ हे जा णो नि या रू वि के री
सा गे री नि हा सा सि मि सु गि त ॥ ६८ ॥ **श्लाका क य य ति म हा पु ष्याः मि ति**
ता स मि वा द्वाः त म हं व ण चि व्या रि मि ति बो च सु स मा हितं ॥ ७० ॥ टिका
आ शा ति दो भा ये चि त क म च ॥ सा हा व य जित का च ॥ इ ति हा स ग गा के वळ ॥ अ
ति नि र्मळ श्री स हो कि ॥ ७१ ॥ श्री स र व द न ब्र ह्मा डि ॥ श्री भा ग व त ओ र व
रि ॥ ज म लि शा ति गो दा व रि ॥ नि ज पु ष्या का रि नि र्मळ ॥ ७२ ॥ ते गु रू यो च नार द नि
उ क्थ ग गा द्वा रि व्या सो कि ॥ ते नि र्मळ नु र्वे क रा व ति ॥ प्र ग ट अ व चि नि प
वि त्र प ण ॥ ७३ ॥ सा प वि त्र वो द्या चि या ग ति ॥ अ र्था धृ ति स म र स म कि ॥ या त्रि अ
रु णा व र णा स र स्व नि ॥ ह सु ग म प्रा प्रि जे य हो य ॥ ७४ ॥ ते णे शा ति ग ग चि
स्ति ति ॥ अ र नि उ य ले अ ति उ न नि ॥ ते ये श्र व णा र्थि जे बु डि दे ति ॥ ते प वि त्र हो ति
नि ज मो क्षा ॥ ७५ ॥ ते शा ति गंगा आ ति वि र्थ्या न ॥ उ ध व के रा व या पु नि त ॥ प्र ग ट क
रि श्री स र ण ना या ॥ नि सु गि त वि न्या स ॥ ७६ ॥ श्ला का के न चि दि सु जा गितं
परि सु त न दु र्ज नाः स्म र ता धृ ति मु क्ते न वि मा कं नि ज क र्म णा ॥ ७७ ॥ टिका

उधवा को फि येक स-या सि॥ दुर्जनित पद वि ता या सि॥ ह्यणे स यो हो ये दुष्ट
 क मा सि॥ येण संनोषे मान सी स मा वंतु ॥११॥ आपु ले आ गि चो मळ ॥ पु दि लि हा
 हि वी ता स क च ॥ जो को धे सि क रि तळ मळ ॥ तो मु र्व के व च यं स चो ति ॥१२॥
 छोक ह्यण ति ज्या सि दुर्जन ॥ स-यां सि ह्यणे ते मा से मन ॥ मा से या दोषा ये निर्द
 ह्यण ॥ था-या धर्म जाण हो न स ॥१३॥ स न्मुख को फि नि दा क रि ति ॥ नेण
 अं सं न सु खो वे चि ति ॥ ह्यण म ज नु ष्ट ला श्री प ति ॥ पो पा चि नि वृ ति हो न सु
 ॥१४॥ ऐ से नि वि वे के त द न ॥ रा ति सि ट्ठो ने दि स र्व था ॥ च दो नि नि ज धे
 य न्ध्या मा या ॥ ग ई ला मा या तो ये का ॥ उ ध वा सि ह्यण स्र ष्ठा ना यु ॥१५॥
 ये द धि हो ई सा व चि तु ॥ अ ति लो भि ता था ति वि र ङ्ग ॥ जाला वृ ता त सा गे न
 ॥१६॥ श्लोक ॥ अ वं ति वृ त्तु दि त्तु आ दा सि दा द न म भि या
 वा न वृ क द र्य स्र का मि लु व्य ति का प नः ॥१७॥ माळ वे दे शी अ वं त
 न ग रि ॥ ते थ ब्रा ह्म ण व स गृ ह दा रि ॥ सृ शि व नि ज वृ ति व रि ॥ जी वि का क रि
 नि र त र ॥१८॥ गा वि ध न धा न्य स म धि ॥ आ म र्य दि द्र व्या चि सि धि ॥ प रि अ
 ति श य रू प ण बु धि ॥ पो दे हि नि मु र्छि न खा ये ॥१९॥ पो र स क दा खा ये क दा न
 ते हि ना हि त द र पु ण ॥ ते थ अ स्त्रि पु त्रा दि दा सि ज न ॥ ज ट र तृ सि नु प व ति ॥२०॥
 न क रि नि द नै मि ह ॥ च प्रि ने ण ध र्म क स जे ण ब्रा ह्म ण आ ति त ॥ ते थ स दा जा क स ॥

परा-मुरव ॥ ८० ॥ कवडायेकलासहोये ॥ ते माता पि सा-य-आध-आहे ॥ ते सा
 दुनि अंश जा महाजाये ॥ नमनिभये स्पशापांच ॥ ८१ ॥ मित्र नमवर्ण हा हि
 नवर्ण ॥ हा धनुळो पिलि अरवण ॥ हा ताये तां देख घन ॥ हिकारि अन्नपति
 ताच ॥ ८२ ॥ घनका मा साटि देख ॥ नमनिपाप मा हा दोख ॥ कवडिलो मकेव
 ये मुरख ॥ नाठ वनर क मापात ॥ ८३ ॥ या परि तोकर्म म्हा ॥ अकर्म करि क्रिया
 उ दुष्ट ॥ अतिवचक महान ॥ केवळ नष्ट घन लोषि ॥ ८४ ॥ हा घन लोभाया
 अवरोधु ॥ ते तां देखो न खवळ को घु ॥ गहम दिव्य वधु ॥ केरावथा सीधु
 स्वये होय ॥ ८५ ॥ घनका मित्रो पाचि वलि ॥ घनापासि पाव आसती ॥ घनलो
 मिया चि स्थिति ॥ कदरु वृत्ति या नावे ॥ ८६ ॥ हे सधन साचिल फजे वाड ॥ हा
 व्य चावै जो जे कणपिडा ॥ ते प्राणानु चि येउनि वेडे ॥ विचार पुढे आसना ॥ ८७ ॥ वान
 राचगा छिचे वण ॥ हातानयनि जित प्राण ॥ ते साद्रव्याचा व्यथे करेण ॥ तेचि
 भारण कदर्या ॥ ८८ ॥ प्रलोक ॥ ज्ञानयो नित्ये येस्त स्या ॥ वाग्मात्रेणा व्यना चिंता ॥
 मुच्या बंसवग्द्यास ॥ किकाल को मेरन चिंता ॥ ८९ ॥ टिका ॥ धरिया भा
 रुवे चल कहि ॥ घाला गि वैश्व देव करण चि नाहि ॥ तेथ आतिथि आ
 लिया पाहि ॥ कोण समर कोण सुजि ॥ ९० ॥ आतिथि आलिया जाण ॥
 हे सबाल बोले आपण ॥ जे वचन मात्र जाण प्राण ॥ हा माग कोण आ

नोदक ॥ ६० ॥ देखो निया चिया घसरा सि ॥ ब्रह्मचारि नि सु उदासि ॥
आस सा डिलि संन्यासि ॥ जे विराजु हं शि गो मये ॥ ६१ ॥ किकारि सा
डिल घाने द्वार ॥ अति घिस डिल सा चे कर ॥ निरतर ॥ पाहुण दु रि पाह
विटार ॥ निरासिक पितर सर्वदा ॥ ६२ ॥ द्वारान ये को रा ने कर ॥ घर सो
डुन गेले उदिर ॥ का उचि को सा डि घर ॥ चि डिस न्या रा मिळना ॥ ६३ ॥
मुया सि पडे नि हलं चना ॥ जे हि धरिल विटार ॥ अन्न ॥ पोटे नखा ये जो आप
ण ॥ तेथ कथा कोण इतरा चि ॥ आयांत मुकला गव्या पोडि ॥ चण ॥ ६४ ॥
हिनखा ये जग जे टि ॥ ते ये का ये सि संव का चि गोष्टि ॥ काजळि पोटी ॥ छि पडे
पुत्रा ॥ ६५ ॥ जे व मन पडे ससि ॥ ते वन करि कळ हारा सि ॥ आधिक वे ये को
ण सा सि ॥ या का गि उ प वा सि स्वय पाह ॥ ६६ ॥ तेथ कुळ गुरुचा सन्मान ॥ कु
ळ धर्म गोत्र भोजन ॥ व्याहि जा वा ई वो गु मान ॥ धन लो मि जाण क दान करि
॥ ६७ ॥ रतु कालि फळे ये ति पुणी ॥ सा दृष्ट भेदि हा रि जाण ॥ परिजी क सि अळि ग
ण ॥ प्राणां ति आपण हो ने दि ॥ ६८ ॥ मात च स्तन पान से विले ॥ ते चि हिर र सना
सि च ॥ पुट दुध चि व जिलि ॥ वृत्त धरिल धन लो भ ॥ ६९ ॥ रसर सने ये माह
ते ने विण गाद लि थोर ॥ धन लो मु आ ति निष्ठुर ॥ करि कर कर भेदि ने दि ॥ ७० ॥

वस्त्रमहविआतिजिर्ण॥ मस्तकसदाचामखिन॥ मुखिवाकनिचनिजाण
 स्वर्गीपाननदेख॥ ५॥ सनवारदिवाछिदसरा॥ तेजुनजेधळधालिचरा॥ ६॥
 नविणपिउळेकमरा॥ कडुयखराथानाव॥ ७॥ देखानिकदर्युवर्तआपण
 घनळोमधर्महिण॥ विमुखजाळेसडाण॥ तेचिनिरोपणहरिबोळ॥ ८॥
 ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥
 ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥
 ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥
 ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥
 ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥
 ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥
 ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥
 ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥
 ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥

यत्नोक्तः॥ धर्मकामविहितस्य॥ न्युत्तुचपंचभागिना॥ ५॥

॥ टिका॥ स्वयेनाजेविनलाविहान॥ वेव्यापासिंजैससुत॥ यानावेवोकीजेयक्ष
वित॥ आसेराखतग्रहेजैसा॥ ११॥ केवळधर्मकामरहित॥ घनलोमिजैस

सुत॥ यानाववोकीजेयक्षवित॥ जीवाहुनिष्प्रअर्थभानि॥ १२॥ स्वरोदिरिमोग
नाहिजाण॥ तेणईहळोकळासुन्ये॥ नाहिस्वधर्मकर्मपचयस॥ परळोकसु

न्येतेजाळा॥ १३॥ यशचैपंचविभागि॥ यशभागनपवेद्यालागि॥ जेकोपेनिपच
भागि॥ वितनाहाळागिउदित॥ १४॥ पावेनिब्राह्मणजन्मवरिष्टा॥ घनलोमैस्व

धर्मनस्त्रातोहोयेउभयेळोकप्रभा॥ पावेकहसपणव॥ १५॥ करिताआतिआ
यासु॥ जोउलाआर्थबहुवसु॥ यासिपाचर्मओळनासु॥ तोहिविळा

सुहुरिसाग॥ १६॥ श्लाका॥ नमोस्तुतेऽयं स्वदेवस्य
रिदोअर्थेप्यगठनिघनबहुयासपरममा॥ १७॥ टिका॥ प

चयसदेवतासकळ॥ येणउपदिल्याकेवळ॥ द्रव्यलाभाचपुन्यसुख॥ पु
ण्यक्षयेतकाळखेदिल॥ १८॥ द्रव्यप्राप्तिपुण्यदिवाकर॥ आसमानागेलाने

भास्कर॥ गगद्रव्यलोभाचाअंशकार॥ अधर्मथोरदादळा॥ १९॥ प्रयाससंचि
लिसंपति॥ तिसिअधर्मअंचराचियेराति॥ दोषल्यापंचयेशमुक्तिपचधा

पावमाहानासु॥ २०॥ सुखिनकरिकुटबालागि॥ जोनिजाहानिवविना

२

॥ ५॥

॥ ५॥

भोगि॥ जो धन न वेचि घमळि गि॥ हा स पच विभागि उठति॥ २०॥ देव दया
 राज देवोई आगि॥ आधर्म रोग सचर आगि॥ ह पच धा जाण वि भागि॥ द्रव्येना सा
 लागि पावति॥ २१॥ नाहि द्विज पुजा अधा मुक्ति॥ नाहि को किक क्रिया उचित
 नाहि दाना दि धर्म वेदोक्त॥ द्रव्य क्षये ते ये अवस्य॥ २२॥ जेथ नाहि वडि का सि
 सन्मान॥ जेथे नाहि पंच महं यश॥ जेथ गुरु सि क हि ति आ मि मान॥ तेथ क्ष
 ये जाण ठ वला॥ २३॥ ज्या सि पराचा देव सुखा॥ जे बोळ ति परा प वादा॥ जेच
 द ति धन गर्व मदा॥ तेथ क्षये सुदा ठ वला॥ २४॥ या या द्रव्यास याच लक्षण॥ ग्रथा
 घाटे निरोपण॥ स्वये सागती हे श्री सखा॥ दयोळु पुर्ण निज भक्ता॥ २५॥ स्त
 क॥ शात योज ग्रहः किंचित्॥ २६॥ दस्य द्रव्य किंचिदुधवः दैवताः
 काळतः किंचिद्भक्ष्यवर्धनं॥ २७॥ दिका॥ स्त्रिपुत्र होउनि
 यकांते ही देवा नेळा कितियेका॥ गोत्र जमि को निसकळिका॥ बळकार देखता
 नेळ॥ २८॥ चोरि फोडुनिया घर॥ कादु निनेळे भांडार॥ आगि लाहि घ
 रव स्त पार॥ जळाळ्या॥ २९॥ हि साळगे किसेत॥ प्रवृत्त बुजला जेथिचा
 तेथ॥ विश्वासेंगे वा घेउनि जाते॥ स्वतं स्वत हार पळे॥ ३०॥ पना डिगे विल्या
 का फुर उड॥ समुद्रा माजि तार बुडे॥ पात करा वरि धाळा पडे चहू कड भापावा
 ॥ ३१॥ ठक येउनि येकांति॥ मुळा म्याचि ना णि देति॥ धन लोभाचि काकु

लति॥ हातिचिसंपतिसासिदे॥३०॥ स्वचक्रपरचक्रविरोधधाडि॥ खणी
 तळाउनिघरफोडि॥ तळेधरिचवेवणकाटि॥ मरुनिकावडिचननेति॥३१॥
 पाणिरिचपेवात॥ तेणधान्येनाससमस्त॥ ठकसोबेनिहारवित॥ देवहात
 तोजाळा॥३२॥ गोवणिसव्यारोगपड॥ निमाळगाईझुसिचवाड॥ उदारने
 लठाणबदिधोड॥ तोरणपडेमाहायुधि॥३३॥ सुमिनिअपजेकरजाति॥
 तेआपव्याकडचुळिकेदिति॥ तेथेचाळुनिनिजसंपति॥ तोडिमातिखयेधा-
 ळि॥३४॥ बुधिसागतिवाजवाडे॥ तेथुनितोडिधाळादगडा॥ ऐसेवेवेबुधि
 सदृढ॥ माचिचाडेधरंगेका॥३५॥ तेवेवेविकेजेअनेक॥ तेप्रयिगिळिके ॥३६॥
 निहाःहोख॥ आयेजाळेजिविमुख॥ जाळआनुवळखितेठावे॥३७॥ अध
 र्मेआदृष्टजाळेहिण॥ विपरितभासदेचिचि॥ पाळटळा॥ निजवर्ण॥ ब्रा-
 ह्मणपणलक्षण॥३८॥ देखेतोपुसजातिकोण॥ तोसागमिब्राह्मण॥ ऐकसा
 चन्मनेमने॥ वर्णश्रमपणमाळबळे॥३९॥ येवंनिहायेजालधन॥ ब्राह्म
 णहृगेळजाण॥ भ्लानबदनहिन॥ दिनाखेदखिनआसदुखि॥४०॥ नो
 क॥ समबंधविणनेस्वधर्मकाववजित॥ उपेक्षितआसजनेश्विंता
 मायेदुस्तया॥४१॥ टिक॥ गेवेसेतनिमाळिकुचवाडि॥ दारपाडिळपरच

6

॥१॥

॥१॥

88

क्रयादिधननासवेनादिकवडिआधमचिजोडीवेहृदहा॥१०॥नाहि
स्वधर्मकर्मनादान॥विहितभोगनकरिआपण॥आधनकोभ्याचनासलधन
जेविकास्वप्रकाच॥११॥देवेजाकापरान्मुख॥याहानभाभ्याचिहृतादेख
स्त्रिसुत्रजालियाविमुख॥नेहिनिरा॥देवडिल॥१२॥अकचनकोभा
चागई॥ईष्टमित्रसुविचिनाहि॥गोत्रजासयाचसुखकाई॥देवडिल
पाहि॥उपदिति॥१३॥प्रसन्ननिदाकरितिकोक॥राडेपारसुकीनिदेख
खाव्यानाहिविषसुख॥भागताभीकमिहना॥१४॥शिककागिडो
जेथेथेगेळा॥भ्रण्तिकाळतोडयेयकांआला॥तोधनकोभेसुळका
भळानागविळाईखर॥१५॥आपनिदिदितिकोक॥धनजाउनिजा
व्हाइक॥चितावतिपडळादेख॥दुरमहादुरपावळा॥१६॥लोक
तस्यवृध्यायतोदीर्घनष्टयस्तपस्विनास्विधनोवाष्यकंदस्य
निबंदसुमहानमृत॥१७॥दिका॥धनकोभ्याचगेळधन॥सुवे
नवचआवण॥नेआववितांफुटतेआहेमन॥तळमळिजाणआदि
दुरव॥१८॥काटारुतळाभुजंगकपाळि॥पुसतुटळियासापसुरळि
हाकाजळावेगळिमासेळितैसातळमळीआतिदुरव॥१९॥मनय

ॐ वितां निजधन। हृदईचाळीकस्फुदन॥ अष्टधारा भवति न येने सुखी
 येण क्षण क्षण॥ ११॥ पोटांतुले आति चरफडे॥ धाय मोकलु निरह॥ उगी
 बैस पाहे पडे॥ कोळ गड बडे अडत॥ १०॥ मगू मगर कटकटाः जाको
 येक चवळ करांता आहा विधात यादुष्ट॥ कार्य आदृष्टालिहिले॥ ५१॥
 मज वावनाहि कोहिकड॥ विनास संभवना पुढे॥ आति दुख आवे जीना
 कडे॥ येण विचार मोहादुखि॥ १२॥ अल्प दुख पावळो येथ॥ पुढे थो
 र दुख आहे माते॥ यम दंड लोह रधान॥ कोण ते ये सोडविल॥ ५२॥
 ॥ ६॥ भ्याना हि केळ पंचमाहायश॥ नाहि दिखल आतिति आन॥ नाहि केळ पीठ ॥ ६॥
 तर्पण॥ भास दुख कोण निवारि॥ १३॥ भ्याना हि दिखले दान॥ मिना हि स्म
 रकोन॥ रायेण॥ मज येति नरक क्षण॥ मये कोण सोडविना॥ ५३॥ भ्याना
 हि केळि दीज पुजा॥ नाही मज को अधोक्षजा॥ नाहि वंदि केवैख वराजा मास
 दुख सह जा कोण नासि॥ ५४॥ मिसर्व या अकर्म करि॥ बुढा को बुडा को आवे
 रि॥ धावे पांगरी हरि॥ मज उधरि दिनात॥ ५५॥ दस पाळु वासुदा॥ आच्युता
 व्यनता श्रीहरि॥ गरुड च जागे वधन चारि मज उधरि दिनात॥ ५६॥

तु वारु द्विजे प्रल्हादासि॥ अवरुषि गर्भवासि उदरिराखिजे परिदिति
 सि॥ ते समजदिनासि उधरि॥ १५॥ तु वारु तारिले आहिलेयसिनष्ट
 उधारिले आजामेव्वासि॥ उडि धातलिगजे द्रायासि॥ तेणवेगसिमज
 तारि॥ १६॥ माहादोरा॥ विदेशाज्जेणि॥ नामेतारिलि कुटणि॥ तेणधावेच
 कपाणि॥ मजहुष्टव्वागुनि उधरि॥ १७॥ जळोजळे हा धनकामु॥ वृथा
 गेव्वा माझा जन्मु॥ फुकाये जे राम मसु॥ ते मिअधमन ह्मणेचि॥ १८॥ राम
 नामाचा प्रतापासादि॥ जळनि माहापापाच्या कोटि॥ भोरआधम मिघेकु
 श्रिषि॥ नामवागपुष्टि न ह्मणेचि॥ १९॥ जे सामानुनि आपराधु॥ आ
 नुना पंकरि नारवेदु॥ उपजळी जति निवडु॥ तेचिगे विदु स्वये सागतु॥ २०॥
 लोक॥ अहो पश्येत मेमोदः॥ दयासायन तापिताः॥ न धर्मयिनका
 माययस्या माया सईदरा॥ २१॥ टिका॥ हानचुरं निहृण कटकटा
 ब्राह्मण देह मोक्षार्थावादा॥ तोळा हो निमिअनिकरटा धनकोमेचष्टनाड
 व्वा॥ २२॥ जेण देहवो मेमोक्षसुख॥ सादेहासि भ्यादि धलेदुख॥ धनकोमि
 मिपरम मुखी॥ मज ऐसा आणिक आसना॥ २३॥ वेचिना धर्मका मासि॥ आर्यु
 जोडवा सायासि॥ सा आर्याचि दहा अयेसि॥ अतिदुख सिमज कळळि॥ २४॥
 वापु धनको भाचको तुक॥ ईहवो कना परवोका॥ धिते अंतरवे मोक्षसुख॥ भो

नरक आनिवार ॥६४॥ देखें ज्या नरकाचा वाईः अकल्प बुडता गावना हि ॥ धन
नको भ्रष्टाचि ते से वाई ॥ ते भ्या नर देहि जो डिळे ॥६५॥ जो जन्म का वा ह्यण देहि
तो पुज्य होये वो कि ते हि ॥ मोक्षे का ग ज्या ये वाई ॥ भ्या आ भ्या गे ते हि ना सिल
॥६६॥ को भय न जे साचि के ॥ ते निः दोष ना सो गे के ॥ पर मज का गि अति दुखि
कर निगे के ॥ बाधो निदिधल महानर्क ॥६७॥ उत मदे हो जा को प्राप्त ॥ तो धन को
मे के का व्यर्थ ॥ आयु के गे व हा तो हात ॥ अति संताप अनु नाप ॥६८॥ धन को
भाये अचारा ॥ वृथा गे के माझे कष्टा वै राखे उ प जले ठड्डट ॥ आनि योरवट स
विवेक ॥६९॥ धन को मि लो का नरा ॥ ते स कळ दुखा न भांडार ॥ धन बधक ते अ ॥७०॥
निषामर ॥ स्वमुख साचार निदि ति ॥ ७१॥ लोका ॥ प्रयाणार्थ कि दयाण न
सुखाय कदाचन देह न्यास ॥ ७२॥ सस्य नरकाये च ॥७३॥ टिका
प्रयासे जे धन बधक ॥ सा सि दे हि को कि ना हि सुख ॥ धन रक्षणी आति दुखा ते जा
ना देख प्राणात् ॥७४॥ धना गम नि आति कष्ट ॥ धन रक्षणी कष्ट प्रेष्ट ॥ धन ना हो
होये हे देय स्फोट ॥ ईह को कि कष्ट धन को भ्या ॥७५॥ या परि ईह को कि दुख ॥ आध
म खुट को पर को क ॥ मरतां उदरि अदळ नरक ॥ आवस्य क धन को भ्या ॥७६॥ जो
धर्म करि ना स्वये नखाये ॥ जो मज सारि खा क दुर्गु होये ॥ या सि विचर ते वाट ते
दुख पाहे ॥ ना हि सुख होय कदया ॥७७॥ लोभ नीव स्ति जिय बाई ते य स्व

10

४

11971

ते यत्प्रीति सुख नाहि ॥ को भु अति नंदु त पाहि ते चि स्व सुख हि सागत ॥

॥ ७४ ॥ स्तोत्रा का ये स्यो ये ब्रह्म विना सुखे ॥ स्तोत्रा च वरुणि गुण ॥

धुं दे सि ॥ जो आंगे विभाडि सारणा सि ॥ खं दिवा हे नि अणि राया सि ये कडि कि ॥ ७५ ॥ टिका ॥ रणि पउतं ॥

ति ल्या सि जो उ चि ॥ ७६ ॥ लो सु सं च रो नि धा रा सि ॥ ये क हो त मा ग वि रा या सि ॥

ते चि आप कि ति हो य दा सि ॥ जग उ प हा सि मुख वे ॥ ७७ ॥ या सि न म ना र ज्ञा ता ॥

॥ ७८ ॥ कर पा हे आप ना स मा न ॥ या सि लो भ अ पु नी ना ग व ण ॥ मुख पू ण च पि ल ॥

॥ ७९ ॥ स्व ये करि ना क न्या दा ने ॥ सक र क क हो य मा व न ॥ ते थ हि ये ता लो से ॥

॥ ८० ॥ द ता ध न ॥ अ चः प त न ध न च न ता थ ॥ दा ता दे उ नि द न ॥ द न प्र सं ग ॥

उ पा डि ध न ॥ ते चि दा रा सि दु ण ल ॥ न दा ना सि ॥ ८१ ॥ वे द शा स्त्रे कर नि ॥

या प ण ॥ प डित जा क आ नि स श न ॥ ता र ध न को भ उ चि ले जा ण श न आ मि ॥

मा न प्र ति ष ॥ ८२ ॥ दे ह प्र ति ष चि ये सि चि ॥ पं डित पं डि ता वा द चि चि ॥ हो क हो क ॥

से नि हो चि ॥ ना ना च क ने ति वि रो ध ॥ ८३ ॥ स वि वे क स श न श या सि ॥ लो भ ॥

आ णि नि दा स्य दा सि ॥ ई त रा चि ग ति कै सि ॥ ते को भा चि दा सि हो उ नि वा ति ॥ ८४ ॥

को भ सु धा सि क रि आ सु धा ॥ लो भु ने थ नि दा स्य दा ॥ ते चि दु षा त त वि शि द ॥ अ क ॥

प्र सि षु लां ग तु ॥ ८५ ॥ कु क सि ल अ ति सु कु भा रः र प स वां ग म नो हा र ॥ ना कि ॥

१०४

या
क

अतताप्रमुभाये॥नीधुसुदरतेणहोये॥५॥तेविंअव्यहिलोमचिजेछि
ति॥नासिओदर्ययेहोकीति॥कोमाहैसचिजगति॥कनआपकिर्तिदुजा
नाहि॥१०॥धनकोमिसदाविरोधु॥धनलोमिरोडिसखबधु॥धनकोम
हैसाबाधुआतिअमृधआसना॥११॥श्लोक॥अबस्यसाधनेसिद्धः३

किंरक्षणोव्ययंनारोपभोगआयास॥नासंखितोधमोनृण॥१२॥

टिका॥प्रयमसिणावेद्रविजाउता॥दसरणिणावेनाटचिता॥द्रव्येजाकेजनि

३॥५॥उकृता॥तहीकोमसर्वथापुरनक्षण॥१३॥द्रव्याकागिभावायताःजेस

कष्टतिसर्वथा॥तेसाकोहिकष्टपरमार्थानपरब्रह्मसर्वताखेछण॥१४॥

येवंकाकिजेउव्याद्रव्यासि॥नतक्षणिअतेचितामानसि॥अतिरोयेकागकि

जिवासि॥आहिणसिधुकधुकि॥१५॥सिपुत्रमातापिता॥सासिपातेजनास

र्वथा॥आपभ्याहोउनिपरताविश्वसआर्थाभानेना॥१६॥विसरेनिधानीज

धाता॥चोरापासुनिराखविता॥वितरक्षणिनिजचिता॥तेहिआवखायेकाग्र॥

॥१७॥ऐसियेकाग्रताकरुनि॥जरिळागताभगवंदक्षजनि॥तारि

वस्यहोताचक्रपाणिआर्धक्षणिसाधका॥१८॥उचिनानुचितवि

वाहसिद्रव्येवेचिताउदरासिआतिरायेहोयकासाविसि॥धन

व्यवोत्रासासि॥उपजवि॥१९॥येवंजोहुनिरहिताद्रव्यासि॥आव

चतुर्नासु हे ये जे हासि॥ ते आनि श्रम च दे मनासि हो नि चना पा
सि बंधक॥ १९॥ द्रव्ये आर्जुनि वस प्रियासि॥ द्रव्यार हाणि चित्तना
वासि॥ द्रव्ये व्यई वा का सात्रासि भ्रमाचार हि वासि च न नास॥ २०॥
आदि मध्य अवसानि पाहि॥ द्रव्ये ते समुक्त आपाई॥ ते थ सुखा चाले
हुनाहि॥ हे ना तरे से पाहि मज्जका नि॥ २१॥ आयास्तत्रा संचित सहि
त सहित॥ धना पासि भ्रम नंदत॥ अर्थ ईत का अनर्थ युक्त॥ ते चि अ
नर्थ स्वये सांग॥ २२॥ आस्तोका॥ द्रव्ये तानुते दमः कामक्रोधम
यो मंदः मंदो बोर म विद्या॥ द्रव्ये तानुते दमः कामक्रोधम
टिका॥ अर्थ सवंगिं अनर्थ युक्त॥ हे ना से वचन त्री ससुसस॥ पुष्टि
माजि जे जे अनर्थ॥ ते ते अर्थ त उ पजति॥ २३॥ पुसाल आर्या च व्य
न र्या॥ ते सा गता असंख्यात॥ स देखे सागे ने ये थ॥ पधरा अनर्थ अ
र्थसि॥ २४॥ प्रथम अनर्थ अर्थसि॥ चोरि अस आर्या पासि॥ अर्थ ना हि
गाज था पासि॥ सासि चोरसि भये अभये ना हि॥ २५॥ द्रव्य ना हि ज्या
नीति॥ हातुं देखे निचार किति॥ का हि मागळ आह्वा प्रति॥ ह्मणे नि
का पति हा भणे॥ २६॥ अनर्थ ने जां नरे नेणे॥ को धातु चो दि सर्व स्वयेण पर



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com